गांधीय चिन्तन में मानववाद की अवधारणा

सीमा रानी विकल

गांधी चिन्तन के पक्ष बहुआयामी है, इसलिए उनके चिन्तन में मानववाद के अध्ययनकर्ता को अनिवार्य रूप से गहराई में जाकर उनके विचारों को कुरेदना होता है तब उनकी आस्था एवं व्यवहार को सहज व स्पष्टता से जान पाते है। गांध ी ने स्वयं कहा है कि 'मैने अनुभव से सीखा है कि समाज में यदि मैं रहना चाहता हूँ तब मुझे अपनी पूर्ण स्वतंत्रता को सर्वाधिक महत्व के मामलों तक ही सीमित रखना चाहिए। अन्य मामलों में जो व्यक्ति के निजी धर्म या नैतिक संहिता का उल्लंधन करते हो, उनमें व्यक्ति को बहुमत का साथ देना चाहिए। 1 जीवन में सत्य के प्रति आग्रह ने ही मुझे समझौते की खूबी को सराहना सिखाया है। बाद में मैंने पाया कि समझौते की भावना तो सत्याग्रह का अनिवार्य अंग है। फिर भी कुछ सिद्धान्त ऐसे है जिन पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता और उन पर आचरण करते हुए अपने जीवन की बलि देने के लिए उद्यत रहना चाहिए। 2

मानववाद की अवधारणा

ऋग्वैदिक सभ्यता लगभग उस प्रकार की थी, जिसे सामाजिक समझौता सिद्धान्त में 'प्राकृतिक अवस्था' कहा गया है। इस प्रसंग में हॉब्स ने प्रकृति के अधिकार अर्थात् प्राकृतिक अधिकारों की चर्चा की है और प्रतिपादित किया है कि मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों की रक्षा प्राकृतिक अवस्था की व्यवस्था के कुछ नियमों पर चलने से हो सकती है जिन्हें उसने प्राकृतिक विधियों का नाम दिया है। प्राकृतिक अधिकार के रूप में हॉब्स मनुष्य की प्रकृति से जोडते है, जिसका तात्पर्य है, कि जिसमें मनुष्य की प्रकृति की रक्षा हो, वह मनुष्य का प्राकृतिक अधिकार है। वे यह मानते हैं कि प्रकृति का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त वह स्वतंत्रता है, जिसके कारण मनुष्य अपनी प्रकृति अर्थात् अपने जीवन की रक्षा के लिए अपनी इच्छानुसार अपनी शक्ति का प्रयोग कर सकता है। 3

प्राकृतिक अवस्था में लॉक ने भी हाब्स की तरह उस स्थिति क तीन भाग किए है (1) आदि काल मनुष्य प्रकृति की गोद में पशुओं की तरह संतुष्ठ रहने वाला था, (2) मध्यवर्ती प्राकृतिक अवस्था में मानव ज्ञान में कुछ वृद्धि हुई, उसने धुमन्तु हालत कम करके कुछ हथियार व आश्रय स्थल बनाए, (3) फिर वह भूमि का स्वामी बना। 4

हॉब्स, लॉक व रूसों आदि ने मानव की जिस प्राकृतिक अवस्था की कल्पना की, उसमें मानव प्रकृति के अधीन था। प्राकृतिक दासता से मुक्ति पाने के लिए मानव द्वारा किए गए प्रयासों के फलस्वरूप ही मानववाद का प्रादुर्भाव हुआ, किन्तु इस अवस्था में भी मानव का प्रकृति से सम्बन्ध बना रहा। अन्तर यह रहा कि जहां 'प्रकृतिवाद' मानव पर प्रकृति के नियंत्रण की अवस्था थी, वहीं 'मानववाद' प्रकृति पर मानव के नियत्रण का प्रयास था। 5

इस सदर्भ में मानववाद वह स्थिति है, जिसमें मनुष्य प्रकृति का दास नहीं रह जाता, बल्कि वह आत्मप्रेरित व्यवहार के माध्यम से प्रकृति को अपनी इच्छा से ढाल सकता है। यह सृजन और आत्म सृजन की क्रिया है। इसमें जड़–जगत और शेष जीवन जगत निरन्तर प्रकृति के निर्विकार नियमों से बंधा रहता है, परन्तु मनुष्य एक स्थान पर इनसे ऊपर उठ जाता है। तब वह प्रकृति और स्वयं मानव जगत का निर्माण एवं पुर्ननिर्माण करने में समर्थ सिद्ध होता है। इस प्रकार प्राकृतिक शक्तियों पर अपना नियंत्रण बढाता जाता है–यानि मात्र वह एक नए मानवीकृत पर्यावरण का निर्माण करता है। 6

यदि पारिभाषिक शब्दों में कहे तो 'मानववाद' वह सिद्धान्त, दृष्टिकोण या जीवन पद्धति है, जिसमें मनुष्य की गरिमा और मूल्यवत्ता को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है और माना जाता है कि मनुष्य अपनी तर्कबुद्धि का उपयोग करके तथा वैज्ञानिक पद्धति अपनाकर आत्म साक्षात्कार करने में समर्थ है। यह दृष्टिकोण मनुष्य के अस्तित्व या गौरव को धार्मिक या अधिभौतिक तत्वों के नहीं जोड़ता बल्कि मनुष्य के विवेकशील प्राण मानकर उनके विवेक को सबसे मूल्यावन तत्व स्वीकार करता है। 7

अब स्पष्ट हो जाना चाहिए कि मानववाद वह दृष्टिकोण है, जिसमें मनुष्य को केवल मनुष्य के नाते समुचित महत्व दिया जाता है। मनुष्य की गरिमा एवं मूल्यवत्ता इसका मूल तंत्र है। इसके अनुसार यदि कोई मनुष्य सामाजिक परिस्थितियों के कारण हीन स्थिति में पहुँच गया है, तो इन परिस्थितियों में सुधार करके उसे ऊंचा उठाने का अवसर देना चाहिए। इसका मन्तव्य है कि उसे अपनी प्रतिभा और परिश्रम का उतना ही पुरस्कार प्राप्त होना चाहिए जितना कि अन्य सफल व्यक्तियों को प्राप्त हुआ है। यह कह सकते है कि मानववाद के तत्व अधिकांशतः शाश्वत एवं सार्वभौम है। 8

गांधीय चिन्तन

गांधीय चिन्तन धारा सार रूप में कर्म प्रधान एवं मूल्य प्रधान का समन्वय है। उनके जीवन दर्शन की जीवन्तता भी विचार एवं प्रयोजन शीलता के अर्थपूर्ण समन्वय की ही परिचायक है। इसी मार्ग के अनुसार वे मानव और उसके जीवन लक्ष्य की परिकल्पना करते है। क्योंकि उनके अनुसार समाज के पुनः निर्माण की आधारभूत शर्त स्वयं मानव की पुनः रचना है।

शोध छात्रा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

यह सर्वविदित है कि गांधी धार्मिक पुरूष थे और जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा है कि मेरे धर्म का अर्थ साम्प्रदायिकता नहीं है। इसका अर्थ है कि विश्व के सुव्यवस्थित नैतिक शासन पर उनका विश्वास (हरिजन 10.02.1940) होना। वहीं उनका कहना था कि सच्चा धर्म एवं सच्ची नैतिकता एक दूसरे से अभिन्न रूप से आबद्ध है। (यंग इंडिया 14.10.1926)। उनके अनुसार व्यक्ति का नैतिक अनुशासन ही सामाजिक पुर्ननिर्माण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। उन्होंने मूलभूत मूल्यों के प्रश्न पर कभी समझौता नहीं किया। यह अलग विषय है कि राजनैतिक रणनीति के स्तर पर उन्होंने खुलापन व लचीलापन बनाए रखा, लेकिन यहां भी सत्य और अहिंसा सदा उनसे अभिन्नता से जुड़े रहे और धृणा का भाव उनकी मानसिकता को छू न सका।

गांधीजी का ध्येय मनुष्य के पाशवीकरण का अवरोध था। धृणा, क्रोध एवं आवेश एवं हिंसा पशुओं में भी होती है। गांधीजी की मान्यता है कि मनुष्य पशुओं से भिन्न है अतएव उचित है कि वह अपने आवेशों पर नियंत्रण लगाए और दैनिक जीवन में समस्याओं को सुलझाने में उन उपायों से काम लें जो पशुओं के लिए दुलर्भ किन्तु मनुष्य के लिए सुलभ है। इस प्रकार अहिंसा को सर्वोपरि मानते हुए वे सत्य तक पहुॅचते है और सत्य के प्रति गहन निष्ठा के फलस्वरूप वे 'अहिंसक सत्याग्रह' का मार्ग अपनाते है।

सत्याग्रह की सफलता से इस प्रयोग का ऐतिहासिक मूल्य सर्वोपरि महत्व का बन गया और कालान्तर में सत्याग्रह कार्यक्रम मानववादी अवधारणा का सफलतम अस्त बनकर नये आयाम स्थापित कर सका। इस धरातल पर गांधीजी को महज पेशेवर राजनीतिज्ञ मानकर खारिज नहीं किया जा सकता है। धार्मिक आस्था और मानववादी समझ से परिपूर्ण गांधीजी ने राजनीति को तात्कालिक परिस्थितियों में एक कर्तव्य रूप में माना क्योंकि इस माध्यम से उन्हें मानव सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रकार गांधीय चिन्तन में समाहित मानववादी हित चेतना के संदर्भ में उन्हें सदा याद किया जायेगा।

सोवियत लेखक अलेक्सेईलीतमान का यह कहना है कि महात्मा गांधी भारतीय जनता के महान नेता को मानववादी विचारक, सच्चे अर्थ में जनवादी और सामाजिक न्याय, राष्ट्रों की समानता तथा शन्ति के अलमबरदार के रूप में याद किया जायेगा। उनके जीवन और कार्यो को दुनिया में कौन नहीं जानता है? अहिंसात्मक साधना में उनकी अडिग आस्था थी। वे सही समझते थे कि संघर्ष की सफलता जनता की शिरकत पर ही निर्भर करती है और उन्होंने पूरे पैमाने पर जनता को एकजूट करके अहिंसात्मक कार्यक्रम समझाया और मानववादी पाठ पढाते उसे आगे ले जाते सफलता हासिल की थी। 9

लीतमान आगे लिखते है कि–विश्वशान्ति के लिए मानववादी महात्मा गांधी समझते थे कि पृथ्वी पर शान्ति की स्थापना के लिए युद्ध के कारणों को स्पष्ट करना और उन्हें दूर करना अत्यन्त आवश्यक है। हिरोशिमा तथा नागासाकी जापान के नगरों पर अमरीका द्वारा अणुबम गिराने की निन्दा करके उन्होंने आम निशस्त्रीकरण के विचार का समर्थन किया। 10 यह स्मरणीय है कि अणुबम के सिलसिले में उन्होंने कहा था कि एटर्नी ऊर्जा का अमरीकी वैज्ञानिक फौजी विनाशकारी उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल कर रहे है। उसे दूसरे वैज्ञानिकों को मानववादी हितों में ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग के लिए इस्तेमाल करना चाहिए और इसके लिए सभी सम्भावनाऐं मौजूद है। 11

मानववादी प्रयासों के अन्तर्गत गांधी विश्व शान्ति के लिए उत्कट अभिलाषा रखते थे। इसे स्पष्ट करते हुए लेखक चेलिशेव का कथन है कि 'विश्व युद्धोत्तर काल में महात्मा गांधी ने बड़े बलिदान देकर हासिल की गई शान्ति को सुदृढ़ बनाने और समानता के आधार पर राष्ट्रो के बीच सहयोग स्थापित करने की अपील की थी। शान्ति के पक्ष में उनके कथन यथार्थवादी थे। उनकी चर्चा का आधार अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में शस्त्रास्त्रों के प्रयोग पर विराम लगाने के सिद्धान्त की आवश्यकता के सिद्धान्त पर था। 12

रामधारी सिंह दिनकर का मत है कि मानववादी महात्मा गांधी के प्रति संसार का ध्यान विशेष तौर पर इसलिए हुआ कि उन्होंने मनुष्य को पशुबल के समक्ष आत्म बल का शस्त्र (अहिंसा) इस्तेमाल करने का तरीका अपनाया और इस तरह अहिंसा का मार्ग प्रशस्त हुआ। सत्य और अहिंसा उनके प्रमुख विषय थे। सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आदि इन्हीं के उपफल है। यो सत्याग्रह की कल्पना अमेरिका के चिन्तक थुरों ने भी की थी और इसकी झलक रूस के संत लेखक लेव तोलस्तोय के विचारों में भी मिलती थी। महात्मा गांधी इन दोनों चिन्तकों से परिचित थे, बल्कि तोलस्ताय उन्होंने गुरू का दर्जा दिया था। परन्तु गांधी ने अपने प्रयोगों तथा चरित्र व आचरण से इन विचारों को पराकाष्ठा पर पहुॅचाया। 13

प्रोफेसर एल.डब्ल्यू.ग्रेस्टेड की धारणा है कि गांधी की महानता उनकी उपलब्धियों में नहीं बल्कि उनके चरित्र में निहित है फिलिप नोएल बेकर ने इसमें दो बातें जोड़ी पहली यह कि मानववादी गांधी के प्रयोजन की पवित्रता और दूसरी उनका ध्येय के प्रति निस्वार्थ समर्पण भाव।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्ण, सत्य और अहिंसा के गुणों के बल पर गांधी की उपलब्धि यह मानते है कि गांधी ने दुनिया के सामने उजागर कर दिया कि अपने लक्ष्य की पूर्ति में ताकत का सहारा लेने वाले राजनेताओं के तरीके कितने क्षुद्र है और यह कि राज्य की भौतिक शक्तियों की तलना में अहिंसा और सत्य की पवित्र शक्ति की जीत होती है। 15

गांधी की मानववादी चिन्तन धाारा और जीवन मूल्यों के प्रति व्यवहारिक समर्पण का भाव उन्हें मानव इतिहास के महानतम पुरूषों की श्रेणी में स्थान दिलाता है। यह धारणा ई.एम.फोरेस्टर ने व्यक्त की है। वहीं आर्नोल्ड टायनबी ने उनके इस मत की पुष्टि दृढ़ता से करते है। डा. के.एच.होम्स ने तो यह कहकर कि 'गांधी, गौतम बुद्ध के बाद महानतम भारतीय थे और ईसा मसीह के बाद महानतम व्यक्ति थे' गांधी को ओर भी ठोस मूल्यांकन कर दिया। 16 इसमें डा. राधाकृष्ण की सटीक टिप्पणी रही कि 'दरअसल गांधी ने राज्य की संगठित शक्ति के मुकाबले अहिंसा और सत्य की पवित्र शक्ति को ला खड़ा किया और उनकी जीत हुई'। गांधीजी ने स्वयं कहा 'मै अहिंसा को अपनाने का आग्रह इसलिए नहीं कर रहा हूँ कि भारत दुर्बल है। मेरी अहिंसा में अत्यन्त सक्रिय बल है इसमें कायरता अथवा दुर्बलता के लिए कोई स्थान नहीं है'। 17

गांधी की सम्यक दृष्टि में व्यवहारिकता को परिभाषित करते उनके चिन्तन के मानववादी स्वरूप को लेखक विद्या निवास मिश्र (उनकी पुस्तक गांधी का करूण रस) ने कहा है कि यह कोई व्यक्तिवाद नहीं सर्ववाद को उजागर करता है और यह सर्ववाद भारतीय चिन्तन का प्राण है। इस सिलसिले में लेखक ने 'मैत्री उपनिषद' के वचन उद्धृत किए है–'यः सर्व पश्यति सः पश्यति' अर्थात जो सबको देखता है वही असल में देखता है–इसकी मीमांसा उपस्थित करते वे कहते हैं कि 'जो सम्पूर्ण जीवन को एक मानकर चलता है और समस्त जीवनों के बीच परस्पर सम्बन्धता देखता है, वही व्यवहार में यथार्थ देखता है' इस प्रकार से लेखक ने स्पष्ट किया है कि मानववाद के लिए मनुष्य का केन्द्र में होना महत्वपूर्ण नहीं है मनुष्यता को केन्द्र में होना चाहिए और मनुष्यता जीवन के प्रति हमारी चिन्ता का विषय हो। इसलिए व्यवहारिकता के गांधीय चिन्तन को ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

यहां जान रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' का जिक्र करना बहुत आवश्यक है। गांधीजी ने अपनी जीवनी में लिखा है कि दक्षिण अफ्रीका में 1904 ई. में डरबन जाते हुए रेल में उन्होंने उस पुस्तक को पढा और इस पुस्तक ने 'मेरे जीवन को बदल दिया', ऐसा लिखा है। इस पुस्तक में तीन तथ्य उभर कर आते है (1) जो व्यक्ति के लिए उत्तम है, वह सबके लिए उत्तम है (2) जो वकील के कार्य का मूल्य है, वही एक श्रमिक के कार्य मूल्य है (3) कृषक या कारीगर का जीवन जीने योग्य है। यह तीनों तथ्य मानववाद का प्रतिनिधित्व करते है। यह भी यथार्थ है कि इसके कुछ काल बाद गांधीजी ने अपने आपकों इन सिद्धान्तों के अनुकूल बदलने का निर्णय ले लिया और मानववादी अगली मंजिल पर अग्रसर हो गए।

गांधीजी ने 'हरिजन' 4 अक्टूबर 1946 में लिखा–'मेरा जीवन लक्ष्य केवल भारतीयों में बन्धुत्व की स्थापना करना नहीं है–मेरा लक्ष्य केवल भारत की आजादी नहीं है, यद्यपि इसमें संदेह नहीं कि इस समय मेरा लगभग सम्पूर्ण जीवन और पूरा समय इसी में लगा है, किन्त भारत की आजादी के जरिये मैं विश्वबंधुत्व के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता हूँ। क्योंकि हम सब ईश्वर की संतान है और इसलिए जीवन जिस रूप में हो वह तत्व एक ही होना चाहिए।' आर इस तरह मानववाद के चिन्तक महात्मा गांधी जीवन भर मानव की सेवा में लगे रहे।

संदर्भ ग्रन्थ

1. यंग इंडिया 14.07.1920 पृष्ठ–4
2. हरिजन 05.09.1938 पृष्ठ 228
3. हाब्स 'लेवियाथन' पार्ट–प्रथम, अध्याय 14–15
4. रूसो सोशल कान्ट्रैनट
5. डा. मधु चतुर्वेदी मानवता की अवधारणा राज पब्लिसिंग हाउस, जयपुर 2005 पृष्ठ–12
6. गावा ओ.पी. राजनीतिक विज्ञान विश्व कोष नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली पृष्ठ–108
7. गावा ओ.पी. राजनीतिक विज्ञान विश्व कोष नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली पृष्ठ–108
8. पाल केगन मैन एण्ड सोसायटी पृष्ठ 15
9. अलेक्सेईलीवमान सोवियत भारतीय मैत्री के स्त्रोत पी.पी.एच. नई दिल्ली 1985 पृष्ठ 149
10. अलेक्सेईलीवमान सोवियत भारतीय मैत्री के स्त्रोत पी.पी.एच. नई दिल्ली 1985 पृष्ठ 149
11. महात्मा गांधी विश्व शान्ति का अहिंसात्मक मार्ग नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद 1947 पृष्ठ–49
12. ये.चेलिशेव सोवियत भारत मैत्री स्त्रोतरादुगा प्रकाशन, मास्को 1985 पृष्ठ 531
13. दिनकर रामधारीसिंह संस्कृति के चार अध्यायराजपाल एण्ड संस, दिल्ली 1958 पृष्ठ–531
14. यू.आर.राव महात्मा गांधी के विचार नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली 1994 पृष्ठ–18
15. डा. राधाकृष्णन महात्मा गांधी ऐसेज एण्ड रिफलेक्शनस् ऑल हिज लाईफ एंड वर्क लंदन पृष्ठ537
16. प्रभू आर के राय/यू.आर. महात्मा गांधी के विचार नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली 1994 (भूमिका पृष्ठ 18–19)
17. यंग इंडिया 29.05.1924 पृष्ठ 176